हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
सोमवार, 20 नवम्बर 2017, लखनऊ, पांच प्रदेश, 20 संस्करण, नगर संस्करण
www.livehindustan.com
वर्ष 22, अंक 269, 22 पेज+16

राजधानी की हवा में घुले प्रदूषित कण कम होने के बजाए और बढ़ गए

लखनऊ में प्रदूषण बढ़ा हवा और जहरीली हुई

- ऊंचाई पर पहुंचे जहरीले कण ओस के साथ नीचे पहुंच रहे
- पानी का छिड़काव व पेड़ों की धुलाई से भी नहीं हुआ खास असर

चिंताजनक

लखनऊ | प्रमुख संवाददाता

लखनऊ की हवा में घुले प्रदूषित कणों में कमी होने की बजाय रविवार को एक बार फिर वृद्धि हो गई। इसी के साथ लखनऊ एक बार फिर देश का सबसे अधिक प्रदूषित शहर बन गया।

चार दिन पहले भी सबसे प्रदूषित शहर था। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मुताबिक लखनऊ का एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) 353 माइक्रोग्राम रहा जबकि शनिवार को 337 माइक्रोग्राम थी।

पानी का छिड़काव व पेड़ों की धुलाई ही प्रदूषण को कम करने का सबसे कारगर उपाय है लेकिन दो दिन की तेजी के बाद प्रशासन व नगर निगम सुस्त हो गया। रविवार को न तो ठीक से पानी का छिड़काव हुआ और न पेड़ों की धुलाई। ऐसें हवा में टिके प्रदूषित कण लोगों के लिए मुसीबत बने हुए हैं। शनिवार को गाजियाबाद सबसे ज्यादा प्रदूषित शहर था लेकिन रविवार को यहां एक्यूआई घटकर 340 माइक्रोग्राम पहुंच गया। आगरा व कानपुर की हवा भी लखनऊ से बेहतर रही। यही नहीं दिल्ली की हवा तो काफी बेहतर हो चुकी है। खनऊ की हवा बेहतर होने के बजाए फिर खराब हो गई।

शहर के लोगों की उम्मीद पर पानी फिरा

शनिवार को एक्यूआई 352 माइक्रोग्राम से घटकर 337 माइक्रोग्राम पहुंची तो बहुत जल्द हवा की गुणवत्ता में सुधार होने की उम्मीद जगी थी लेकिन स्थिति उसके विपरीत हो गई। इसी के साथ वाराणसी की हवा भी बहुत खराब की स्थिति में पहुंच गई। यहां एक्यूआई 311 माइक्रोग्राम रिकार्ड किया गया। सीपीसीबी की 42 शहरों की मानीटरिंग में हवा की सबसे खराब गुणवत्ता वाले शहरों में लखनऊ के अलावा आगरा, गाजियाबाद, वाराणसी, भिवाड़ी गुड़गांव व पाली शामिल हैं।

एक्यूआई की स्थिति

शहर	19 नवंबर	18 नवंबर	17नवंबर
लखनऊ	353	337	352
दिल्ली	292	298	310
गाजियाबाद	340	364	378
मुरादाबाद	294	333	324
नोएडा	259	288	286
आगरा	332	361	344
वाराणसी	311	---	---

नोट: आंकड़े माइक्रोग्राम प्रतिघन मीटर में।

ग्रीन हाउस गैसों से बढ़ रहा है प्रदूषण

लखनऊ। आसमान में दस से बीस किलोमीटर की ऊंचाई पर ग्रीन हाउस गैसों का जमाव प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है। ठंड की शुरुआत होते ही वह ओस के साथ नीचे आने लगती हैं। पिछले दो-तीन वर्ष से ठंड की शुरुआत में कई दिनों तक प्रदूषण की समस्या लगातार बन रही है। इसका समाधान सरकार व लोगों के प्रयास से ही संभव है।

यह कहना है वरिष्ठ पर्यावरण वैज्ञानिक व स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक (तकनीकी) डा. भरत राज सिंह का। उन्होंने कहा कि औद्योगिकीकरण व वाहनों की बेतहाशा वृद्धि व उसके इंजन से निकलने वाला धुआं आसमान में लगभग 10 से 20 किलोमीटर ऊंचाई पर ग्रीन हाउस गैस के रूप में जमा हो रही है। इसके अलावा दीवाली पर पटाखे, चटाई व धुआं देने वाले फुलझड़ियां हवा को और जहरीला बना रही हैं। दीवाली के साथ ही शरद ऋतु की शुरुआत हो जाती है। रात में हवा में नमी आने से जलबिन्दु ओस के रूप में नीचे आने लगती है। उसके साथ ऊंचाई पर मौजूद जहरीले कण भी नीचे आने लगते हैं। वह धुएं की धुंध के रूप में चारों ओर इकट्ठा हो जाते हैं। यही कारण है कि पीएम-2.5 व पीएम10 की मात्रा 10 से 12 गुना तक बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि प्रदूषण की यह स्थिति जनमानस के लिए बहुत की खतरनाक है। सांस लेते समय यह कण नैनो आकार में सांस की नाली के माध्यम से फेफड़ो, हृदय की धमनियों व आंतों में पहुंचकर चिपक जाते हैं। शरीर के अंदरूनी दीवारों के रास्तों को भी संकरा कर देते हैं।

सुझाव

- पटाखों की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए। कागज, पत्तों व कूड़ा करकट को जलने पर रोक लगाई जाए।
- सड़क व खुले स्थानों पर पानी के छिड़काव के बाद झाड़ू लगाई जाए जिससे धूल के कण न उड़े।
- बच्चे व बुजुर्ग इस मौसम में बाहर निकलने से बचें। आश्यकतानुसार मास्क का उपयोग करें।
- प्रदूषण की खतरनाक स्थिति सप्ताहभर बने रहने की सम्भावना पर कृत्रिम बारिश कराया जाए।
- घरों के आसपास, ऊपरी छत से जमीन तक पानी का छिड़काव प्रत्येक दिन करें, जिससे हवा में मौजूद जहरीले कण जमीन पर पहुंच जाएं।